वर्मा गा रहे थे, श्रोता 'दाद' दिये जा रहे थे

कला प्रतिनिधि
रायपुर, 10 सितंबर.

छत्तीसगढ़ अंचल के सुपरिचित गजल-गायक अश्विनी वर्मा ने अपनी परंपरागत गजल गायकी से कल रात यहां सुर-प्रेमियों के दिलों में अपनी जगह बना ली. यह आयोजन सिविल लाईन स्थित 'चौधरी-निवास' पर किया गया था.

'नगमों की बरसात गीत गजल की छांव में' नामक इस सुगम महफिलें में बरसों बाद रागदारी बद्ध गजल गायकी से श्रोता दर्शकों रूबरू होने का मौका मिला. करीब तीन घंटे से अधिक समय तक रौनक इस महफिल में शहर की अनेक जानी-मानी हस्तियां मौजूद थीं. दिल की गहराइयों को छू लेने वाले दिलकश नगमों की इस रात में मशहूर गीत-गजल गायक अश्विनी वर्मा मुख्य गायक थे. श्री वर्मा ने गीत, गजलों के अलावा कुछ पंजाबी गीतों से भी समां बांधा. झतहर राज, जया नर्गिस, रइस, बुल्लेशाह, बशीर बद्र सहित अनेक पुराने शायरों की रचनाओं का गायन करने वाले अश्विनी वर्मा ने अंचल के शायर 'मोहसिन अली सुहैल' की कुछ रचनाओं का गायन भी इस अवसर पर किया. अंचल के स्व. रतनचंद वर्मा के चिरंजीव अश्विनी उन बिरले गायकों में से हैं जिसके पास 'घरानेदारी' से उपजी गजल गायन विधा सुरक्षित है. लाहौर के श्याम चौरासी घराने से सीधे जुड़े अश्विनी वर्मा मूलत: महफिली गायक हैं. उनके गायन का अपना निराला अंदाज है जिसमें एक साथ कई खूबियां नजर आती हैं. और श्री वर्मा आज इस अजीबो-गरीब गायन शैलियों के मध्य अपनी विरासत को सहेजे हैं, यह देखना सुनना किसी अचंभे से कम नहीं! श्री वर्मा गा रहे थे और गुणी श्रोता उन्हें 'दाद' दिये जा रहे थे. श्री वर्मा के साथ गजलों को संवारते चल रहे तबला वादक- सोहन दुबे थे. अनुभवी श्री दुबे ने गीतों और गजलों के मिजाज के अनुरूप लग्गी-लड़ियां से गायकी के मूड को और संवार दिया. लंबे अंतराल के पश्चात श्री दुबे को सुना गया. गिटार पर भिलाई निवासी जोहेब अहमद थे. यह आयोजन श्री वर्मा के शार्गिद सत्यप्रकाश झा और संगीत प्रेमी अमिता-चौधरी एवं श्रीमती सुनंदा चौधरी के विशेष प्रयासों से संभव हुआ था. कार्यक्रम का संचालन मोहसिन अली सुहैल ने किया. आभार माना सत्यप्रकाश झा ने. इस महफिल का लुत्फ उठाने पूर्व राजनयिक एस.एस. प्रधान, केन्द्र निदेशक आकाशवाणी हसन खान, व्ही.के. चौबे लोकायुक्त पुलिस अधीक्षक, जे.बी. सिंह, डा. विरदी, गुरूचरण होरा, चिकित्सकों श्री एवं श्रीमती अनिल वर्मा, डॉ. दल्ला, सतीश बतरा, डॉ. आडिल, डॉ. विनोद तिवारी, शायरों सहित मीडिया कर्मी मौजूद थे.

नगमों की बरसात गीत-गजल की छांव में

छत्तीसगढ़ 11-9-2000

संगीत अश्विनी ने आवाज़ का जादू बिखेरा

'टूटा ज़रूर हूं, अभी बिखरा नहीं हूं मैं'

कला संवाददाता

रायपुर, 10 सितंबर। मशहूर ग़ज़ल गायक अश्विनी वर्मा की गायकी का कल रात संगीत रसिकों ने आनंद लिया। उन्होंने दिल को छू लेने वाले गीत व गजलें पेश कर समां बांध दी। इसके अलावा श्री वर्मा ने पंजाबी गीतों की भी छटा बिखेरी। तालियों की गड़गड़ाहट तथा वाह-वाह के बीच देर रात तक महफिल-ए-गजल चलती रही।

अमित चौधरी व सत्यप्रकाश झा द्वारा सिविल लाइंस में कल रात संगीतप्रेमियों के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। गजल गायक अश्विनी का नाम शहर के लिए जाना-पहचाना है। बारह वर्ष पूर्व उन्होंने पहली बार महाराष्ट्र मंडल में अपनी आवाज का जादू बिखेरा था। श्री वर्मा ने प्रारंभ में कई आशिकाना गजलें प्रस्तुत की। शायर मयंक की इन पक्तियों पर श्रोता झूम उठे- 'हम उनसे प्यार करते हैं वो हमसे प्यार करते हैं, मगर ये भी हकीकत है बयां करने से डरते हैं।' इस शेर पर भी उन्हें वाहवाही मिली 'हम बनाते हैं तो हर बात बिगड़ जाती है, तुम कोई बात बनाओ तो कोई बात बने। उन्होंने मंजूर नदीम की गजल का जब ये शेर अपनी सुरीली आवाज में पेश किया तो कार्यक्रम स्थल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा-' 'अपनी शिकस्त मानने वाला नहीं हूं मैं, टूटा जरूर हूं अभी बिखरा नहीं हूं मैं।' देश के ख्यातिलब्ध शायरों की रचनाओं के साथ ही उन्होंने नगर के शायर हाजी मोहसिन अली सुहैल की भी गजलें सुनाईं। अंत में राग-बैरागी में ये गजल प्रस्तुत की 'ये मुझको समझाने वाले उनको इतना समझा देना, गम कम होगा रोते-रोते आएगा करार आते-आते।' तबले पर सोहन दुबे व गिटार पर जोहैब ने संगत की। प्रारंभ में मोहसिन अली सुहैल ने श्री वर्मा का परिचय दिया। मुख्य अतिथि विनोद कुमार चौबे (विजिलेंस एस.पी.) ने अश्विनी वर्मा, सोहन दुबे व जोहैब को शाल भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में नगर के अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

देनिक भास्कर 11-9-2000